>kj[k.M ds laxzgky; ¼1953 bZ0&2021 bZ0½ % ,d ,sfrgkfld v/;;u

ih,p-Mh- mikf/k gsrq izLrkfor 'kks/k&izk:Ik dh :ijs[kk

¼lkekftd foKku ladk;½

fo'ofo|ky; bfrgkl foHkkx

jk¡ph fo'ofo|ky;] jk¡ph

'kks/k funsZ'kd%

Mk- jkt dqekj

सहायक प्राध्यापक

विश्वद्यिालय इतिहास विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

9431182959

'kks/kkFkhZ%

gthjk dqtqj

यू.जी.सी.नेट, जे.आर.एफ.

विश्वद्यिालय इतिहास विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

6287652821

>kj[k.M dk lxhgky; ¼1953 b0&2021 b0½ % ,d ,frgkfld v/;;u

1- fo"k; dk ifjp;

झारखण्ड अपने प्राकृतिक सौंदर्य, विपुल खनिज संपदा, विविध संस्कृति भौतिक संसाधन से संपन्न देश का 28वाँ राज्य है। अविभाजित बिहार राज्य के उत्तरी तथा दक्षिणी छोटानागपुर एवं संथाल परगना को मिलाकर ''बिहार–राज्य पुर्नगठन विधेयक, 2000'' के अर्न्तगत 15 नवम्बर 2000 ई0 को बिरसा मुण्डा जयंती के अवसर पर झारखण्ड राज्य का विधिवत गठन हुआ। इस विधेयक के अनुसार बिहार राज्य के 18 जिलों को मिलाकर झारखण्ड राज्य की संरचना हुई। झारखण्ड राज्य की राजधानी रांची बनी। रांची प्राकृतिक सौंदर्य और ऐतिहासिक धरोहरों से समृद्ध है। रांची में पहाड़ी मंदिर, चुटिया का राम मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, देवड़ी मंदिर, सूर्य मंदिर आदि धार्मिक, पुरातात्विक एवं सांस्कृतिक धरोहर है।

झारखण्ड भारत के पूर्वी हिस्से के बंगाल के पश्चिम में तथा बिहार के दक्षिण में स्थित पठारी क्षेत्र है। झारखण्ड मालवा पठार एवं गोंडवाना लैण्ड का क्षेत्र है। झारखण्ड क्षेत्र की स्थिति पुरातात्विक दृष्टि से चार प्रमुख भ्रंश क्षेत्रों में है – सोन भ्रंश क्षेत्र, स्वर्णरेखा भ्रंश क्षेत्र दामोदर भ्रंश क्षेत्र, और सिंहभूम अधिक्षेपण क्षेत्र। इस राज्य का अक्षांशीय विस्तार $21^0$58'10" से $25^0$18' उत्तर है तथा देशान्तरीय विस्तार $83^0$19'50" से $67^0$57' पुरब तक है। इसके पूरब में पश्चिम बंगाल, पश्चिम में उतर प्रदेश और छतीसगढ, दक्षिण में उड़ीसा और उत्तर में बिहार राज्य अवस्थित है।

झारखण्ड राज्य का विस्तार पूरब–पश्चिम में लगभग 463 कि0मी0 तथा उत्तर–दक्षिण में 380 किमी है। झारखण्ड भारत के पूर्वी हिस्से में स्थित है तथा विश्व मानचित्र में इसकी स्थिति उत्तरी गोलार्द्ध में है। इसका कुल क्षेत्रफल 79,714 वर्ग कि.मी. है जो भारत के क्षेत्रफल का 2.42 प्रतिशत है। क्षेत्रफल की दृष्टि से देश में इसे 15वां स्थान प्राप्त है। राष्ट्रीय जनगणना, 2011 के अनुसार झारखण्ड की कुल जनसंख्या 32988134 है जो भारत की कुल जनसंख्या का 2.72 प्रतिशत है एवं इस

दृष्टि से देश में 13वां स्थान प्राप्त है। इस राज्य में पांच प्रमण्डल, 24 जिलें 45 अनुमण्डल है। झारखण्ड में 263 प्रखण्ड, 326 पुलिस थाने, 3744 पंचायतें और 32615 गांव है। झारखण्ड का जनसंख्या घनत्व 414 व्यक्ति प्रति वर्ग कि.मी है। राज्य की साक्षरता दर 67.6 प्रतिशत है।

झारखण्ड राज्य में कुल 32 जनजातियाँ निवास करती हैं, जिनमें 8 (आठ) आदिम जनजाति है। ये जनजातियाँ यहां की संस्कृति एंव परंपरा को विशेष पहचान देती है। आदिवासी हस्तशिल्प, डोकरा कला, काष्ठकला, पारम्परिक चित्रकला, आभूषण, बांस के उत्पाद इत्यादि इनकी पहचान है इन कलाओं ने न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।

झारखण्ड में अनेक पर्यटन स्थल है, जिनमें जल प्रपातों का मुख्य स्थान है। हुंडरू जलप्राप्त, दशम जल प्रपात, सीता जलप्रपात, हिरणी जलप्रपात, जोन्हा जलप्रपात, बुढ़ाघाघ, पंचघाघ, पेरवाघाघ, रजरप्पा जल प्रपात, घधरी जल प्रपात, प्रेमाघाघ, नागफेनी जल प्रपात आदि प्रकृति को सौंर्दय प्रदान करती है।

झारखण्ड का शाब्दिक अर्थ है – जंगल झाड़ वाला प्रदेश। वायु पुराण में इसे मुरण्ड तथा विष्णु पुराण में मुंड कहा गया है। महाभारत काल में छोटानागपुर का नाम पुंडरिक देश था। चीनी मात्री फाह्यान 399 ई0 में बौद्ध ग्रंथों की खोज में भारत आया था। उनके विवरण में झारखण्ड का जिक्र किया गया है। फाह्यान ने छोटानागपुर को फुक्कुटलाड कहा है। मुगलकाल में झारखण्ड को खुखरा नाम से जाना जाता था। ब्रिटिशकाल में यह झारखण्ड नाम से संबोधित किया गया। बिहार डिस्ट्रिक गजेटियर, हजारीबाग में उल्लेख है कि असूरों का राजा जरासंघ अपने शत्रुओं को पराजित कर झारखण्ड के जंगलों में छोड देता था। मुगल काल के दस्तावेजों में झारखड की ऐतिहासिक पहचान के प्रमाण मिलते है।

झारखण्ड ऐतिहासिक क्षेत्र के रूप में मध्य युग में उभर कर सामने आया। झारखण्ड का पहला उल्लेख 12वीं शताब्दी के नरसिंह देव (गंगवंश के राजा) के शिलालेख में मिलता है। यह शिलालेख दक्षिण उड़िसा में पाया गया है। उसमें दक्षिण

झारखण्ड का उल्लेख है। यानि उस समय उत्तर झारखण्ड की भी पहचान थी जो उड़ीसा के पश्चिम पहाड़ी जंगल क्षेत्रों से लेकर आज के छोटानागपुर, संताल परगना, मध्यप्रदेश तक फैला हुआ था। 15वीं सदी के अंत में एक बहमनी सुल्तान जो खानदेश का था, जिसका नाम आदिलशाह द्वितीय था, उसने झारखण्डी सुल्तान की पदवी ग्रहण की थी।

राज्य की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का कालावधि प्रागैतिहासिक काल से लेकर नवपाषाण काल तक प्राचीन है। झारखण्ड प्रागैतिहासिक मानव समुदायों का शरणस्थल रहा है। चाईबासा जिला के रोरो घाटी पर डी.सेन तथा ए.के. घोष ने सर्वे किया था और दो स्थलों की खोज की गई तिमिलडीह तथा लुपुंगगुटू। यहां से निम्न पुरापाषाण काल के हैण्डेक्स, क्लीवर तथा स्क्रेपर इत्यादि मिले है जबकि मध्यपुराषाणकाल के साईड स्क्रेपर, पॉईंट आदि प्राप्त हुए है।

रांची जिला में प्रागैतिहासिक सर्वे भी बॉल (V.Ball) के द्वारा किया गया था, उन्हें नवपाषाणिक सेल्ट बारूडीह खुँटी प्रखण्ड से प्राप्त हुआ है।

भारतीय पुरातत्व में असुर शब्द का प्रयोग झारखण्ड के रांची, खुंटी, गुमला और लोहरदगा जिलों के कई स्थलों की ऐतिहासिक पहचान के लिए प्रयुक्त होता है। लोहरदगा, गुमला के चैनपुर आदि इलाकों में असुर जनजाति निवास करती है। झारखंड के आद्यऐतिहासिक स्थलों की खोज में एस.सी.राय की अहम भूमिका है उन्होंने 1914–1920 ई0 में कई असुर स्थलों को खोज की। ये असुर स्थल प्राक्ऐतिहासिक युग से संबंधित थे। एस.सी रॉय के द्वारा खूंटी के बीस गांव में असुर स्थलों को खोजा गया था। इन 20 गांवों से लौह गलाने की भट्ठी, ताम्र के गहने, सोने के सिक्के, मनके, मृदभांड ईटों के टुकडों के भग्नावशेष प्राप्त हुए है।

इस स्थल को असुरगढ़ नामित किया गया है। एस.सी राय के द्वारा सारीदकेल की खुदाई में तांबे की हुक, रॉड, तांबे के सिक्के, एरोहेड (वाणाग्र) आदि प्राप्त हुए है। झारखण्ड में कॉपर होर्ड कल्चर तथा ताम्र निधि संस्कृति से संबंधित पुरास्थलों में गिरीडीह की पचम्बा प्रमुख है, जहां तांबे के गहने आदि प्राप्त हुए है।

एस.सी. राय ने खूंटी प्रखण्ड के कई क्षेत्रों का दौरा किया था। इस क्षेत्र में झारखण्ड के आद्य ऐतिहासिक स्थल के रूप में निम्नलिखित स्थलों की खोज की थी। बेलवादाग खूंटी से चार मील पश्चिम, दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। इस स्थल के दो एकड़ क्षेत्र में असुरों के साक्ष्य मिलते है। इस स्थल को ग्रामीण लोग ईटाडांड़ कहते है।

लोहरदगा से कांसे का एक प्याला प्राप्त हुआ है। उसे असुर काल से संबंधित माना जाता है। हजारीबाग में बराकर नदी के पास दूधपानी नाम की जगह है। वहां से 1894 ई0 में कुछ अभिलेख मिले थे। लिपि के आधार पर इन अभिलेखों का काल 8वी शताब्दी माना गया है। दूधपानी के पास दुमदुमा में (8 वीं से 12वीं शताब्दी) मूर्तियां, पत्थर के अवशेष और शिवलिंग प्राप्त हुआ है। चतरा के हंटरगंज प्रखण्ड से करीब दस कि.मी. दक्षिण–पश्चिम में कोल्हुआ पहाड़ है। इसी कोल्हुआ पहाड़ यानी कोलेश्वरी पहाड़ के शिखर पर हिन्दू देवी देवताओं के साथ जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ है।

भारत के उतर पूर्व में अवस्थित झारखण्ड क्षेत्र भौगोलिक संरचना की दृष्टि से अपनी विशिष्ट पहचान रखता है। इस क्षेत्र में 5वीं से 19वीं शताब्दी के मध्य लगभग 60 अभिलेख प्राप्त हुए हैं जिससे पता चलता है कि यह क्षेत्र मौर्य, गुप्त, पाल, नाग, सिंह तथा मुगल आदि अनेक शासकों द्वारा शासित रहा। इन राजाओं के धार्मिक क्रियाकलापों का प्रभाव यहां के संस्कृतिक जीवन पर स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होता है। लोगों के धार्मिक जीवन में प्रमुख रूप से पौराणिक धर्म का प्रचलन था। वैष्णव, शाक्त एवं उनके विभिन्न रूपों के साथ साथ सरस्वती, गणेश, सूर्य, अन्नपूर्णा देवी देवताओं का तत्कालीन अभिलखों के अध्ययन से पुष्टि होती है। झारखण्ड के किलें एवं राज प्रसादों का महत्वपूर्ण स्थान था। किले एवं राज प्रसाद यहां के स्थापत्य कला का प्रतिनिधित्व करते है। इस क्षेत्र से प्राप्त प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक पुरातात्विक अवशेषों में प्रतिमाओं का भी प्रमुख स्थान है। झारखण्ड में अनेक

पुरातात्विक स्थलों के उत्खन्न से प्रतिमाएँ प्राप्त हुई है, जिन्हें यहां के संग्रहालयों में संरक्षित एंव प्रदर्शित किया गया है।

झारखण्ड राज्य अपने समृद्ध इतिहास एवं सांस्कृतिक धरोहर के लिए प्रसिद्ध है। झारखण्ड के इसी सांस्कृतिक विविधता को दर्शाने के लिए राज्य में कई संग्रहालय स्थापित किए गए है।

संग्रहालय को परिभाषित करते हुए बताया गया है कि यह कलात्मक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक एवं वैज्ञानिक महत्व की कृतियों का संरक्षण एवं प्रदर्शन करता है। इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्युजियम के वर्तमान परिभाषा के अनुसार ''संग्रहालय समाज की सेवा में एक गैर सरकारी स्थायी संस्था है जो मूर्त और अर्मूत विरासत पर शोध, संग्रह, संरक्षण, व्याख्या और प्रदर्शन करती है। जनता के लिए सुलभ और समावेसी संग्रहालय विविधता और स्थिरता को बढ़ावा देती है, शिक्षा, आनंद, चिंतन और ज्ञान साझा करने के लिए विविध अनुभव प्रदान करती है।''

भारतीय परिपेक्ष्य में संग्रहालय का प्रमाण रामायण में दशरथ और रावण के महलों का जो वर्णन मिलता है उनके कमरों में पूर्वजों और देवताओं की मूर्तियों तथा शास्त्र आदि को संगृहीत करने की चर्चा है। इनके लिए यहां चित्रशाला शब्द का प्रयोग किया गया है। इसके लिए संस्कृत ग्रंथों में चित्रकठिस का भी उल्लेख हुआ है। इसे संग्रहालय का प्रारूप माना जा सकता है।

भवमूति ने 'वीथी' (गैलरी) का उल्लेख किया है। इसका अभिप्राय है बड़ा एवं विशाल कक्ष। चित्रवीथी के लिए उसने विमान पंक्ति का उल्लेख किया है।
संग्रहालय (चित्रशाला) के निर्माण की विधि नारद–शिल्प में दी गई है।

भारतीय संग्रहालय (इंडियन म्यूजियम) भारत का सबसे पुराना संग्रहालय है जिसकी स्थापना एशियाटिक सोसाइटी बिल्डिंग में वर्ष 1914 में डेनमार्क के प्रसिद्ध वनस्पति शास्त्री डॉ0 नथानियल वालिच द्वारा की गई थी। स्वतंत्रता के बाद राष्ट्रीय स्तर के तीन संग्रहालयों का जन्म हुआ।

1917 ई0 में ब्रिटिश काल में आविभाजित बिहार में पटना संग्रहालय की स्थापना की गई। झारखण्ड में संग्रहालय की स्थापना की शुरूआत सर्व प्रथम 1953 ई0 में डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय कल्याण शोध संस्थान के साथ की गई थी। इसके बाद 1974 ई0 में एक संग्रहालय की स्थापना इसी परिसर में की गई। 2009 ई0 को होटवार, रांची में इसी संग्रहालय का विस्तार राज्य संग्रहालय के रूप में किया गया। इस संग्रहालय का उदघाटन भारत के उपराष्ट्रपति मोहम्मद हामिद अंसारी ने किया था। 1991 ई0 में संस्कृति संग्रहालय एवं आर्ट गैलरी हजारीबाग, 2005 ई0 में जनजातीय संग्रहालय गुमला, 29 मार्च 2009 को सिक्का संग्रहालय जमशेदपुर, 15 नवम्बर 2021 ई0 में बिरसा मुंडा स्मृति संग्रहालय रांची, आदि प्रमुख संग्रहालयों की स्थापना की गई।

वर्तमान में झारखण्ड में छोटे बडे संग्रहालयों को मिलाकर इनकी संख्या कुल 12 है। झारखण्ड में सूचीबद्ध पर्यटन स्थलों का 12 प्रतिशत संग्रहालयों का हिस्सा है।

2- lkfgR; leh{kk

झारखण्ड के इतिहास के बारे में अनेक पुस्तकों में विभिन्न परिपेक्ष्य में अनेक तथ्यों को उजागर किया गया है किन्तु संग्रहालय से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों का उदाहरण कम ही प्राप्त होते है। फिर भी कुछ साहित्यों के विवरण इस प्रकार है –

- दिवाकर मिंज द्वारा लिखित पुस्तक >kj[k.M dk bfrgkl झारखण्ड के ऐतिहासिक विकास को प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में झारखण्ड के प्राक इतिहास एवं आद्य इतिहास के विषय में प्रकाश डाला गया है। इसमें झारखण्ड के विभिन्न जिलों में खुदाई से प्राप्त पुरावस्तुओं के विषय में जानकारी दी गई है, किन्तु इन पुरावशेषों को राज्य के किस संग्रहालय में रखा गया है। इस विषय में कोई चर्चा नही की गई है।
- सीपी सिन्हा एंव अरविन्दा सिंघा रॉय द्वारा लिखित पुस्तक ih ,M ikVk fgLVh vkQ >kj[k.M झारखण्ड के प्राचीन और आद्य ऐतिहासिक काल को

प्रस्तुत करती है। इस पुस्तक में झारखण्ड राज्य के प्रागैइतिहासिक एवं आद्यऐतिहासिक पुरास्थलों की खोज, उन स्थलों की खुदाई एवं प्राप्त पुरावशेषों की जानकारी प्रदान की गई है। इस पुस्तक में झारखण्ड के संग्रहालयों के विषय में कोई जानकारी नही दी गई है।

- व्योमकेश त्रिपाठी, गौरी शंकर महापात्रा एवं बसंत कुमार मोहनता द्वारा लिखित पुस्तक ,FkuksxzkfQd E;qft;e% bu lkÅFk bZLV bafM;k में जनजातीय कल्याण शोध संस्थान एवं संग्रहालय रांची के विषय में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है किन्तु इस पुस्तक में राज्य के अन्य संगहालयों के विषय में कोई चर्चा नही की गई है।
- सीमा ममता मिंज द्वारा लिखित पुस्तक vkfdZ;ksykWth vkWQ >kj[k.M Lis'ky fjQjsal VwµgtkjhckWx fMLVªhd में झारखण्ड के पुरातात्विक महत्व को उजागर किया गया है। इस पुस्तक में पुरातात्विक स्थलो, स्मारकों और कलाकृतियों का विश्लेषण किया गया है। इस पुस्तक में झारखण्ड के संग्रहालयों के विषय में कोई जानकारी नही दी गई है।
- अरबिन्दा सिंघा राय द्वारा लिखित पुस्तक LdYipj bu n LVsV E;wft;e jkaph में मूर्ति वीथिका से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान की गई है किन्तु संग्रहालय के अन्य विथिकाओं के विषय में कोई विशेष जानकारी नही दी गई है।
- सीपी सिन्हा द्वारा लिखित पुस्तक vkVZ ,.M vkfdZVsDpj vkWQ >kj[k.M में झारखण्ड कि कला और वास्तुकला को प्रस्तुत किया गया है। इस पुस्तक में झारखण्ड की विविध कला और वास्तुकला का वर्णन किया गया है, इसमें प्राचीन मंदिर, स्मारक और कलाकृतियों का वर्णन किया गया है किन्तु संग्रहालय के विषय में उल्लेख नही किया गया है।

- शिवस्वरूप सहाय द्वारा लिखित पुस्तक lxgky; dh vkj में देश के विभिन्न संग्रहालयों के विषय में जानकारी प्रदान की गई है। किन्तु विशेष रूप से झारखण्ड के संग्रहालयों के विषय में कोई उल्लेख नही किया गया है।
- मोहम्मद शर्फुद्दीन के द्वारा संपादित पत्रिका fgMu okd n >kj[k.M oh uk bt tLV n lQ:l में राज्य संग्रहालय रांची के विभिन्न वीथिका में रखे प्रर्दशो के विषय में वर्णन किया गया है किन्तु इससे राज्य के अन्य संग्रहालयों के प्रर्दशों के विषय में कोई जानकारी नही मिलती है।
- डीएन ओझा द्वारा लिखित पुस्तक >kj[k.M d vfHky[kk dk lkLdfrd v/;;u में झारखण्ड के विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त अभिलेखों का वर्णन किया गया है जिससे यहां के ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासतों के विषय में पता चलता है। किन्तु इस पुस्तक में झारखण्ड के संग्रहालयों की कोई चर्चा नहीं मिलती है।

3- 'kks/k fjfDr

उपरोक्त साहित्य समीक्षा से हमें ज्ञात होता है कि झारखण्ड के पुरातात्विक इतिहास, जनजातीय कला, संस्कृति, झारखण्ड के सामाजिक, आर्थिक एंव सांस्कृतिक जीवन के विषय में विस्तृत जानकारी हेतु विभिन्न रचनाएं उपलब्ध है। झारखण्ड के पुरातात्विक इतिहास एवं जनजातीय कला संस्कृति के संरक्षण में यहां के संग्रहालयों का महत्वपूर्ण भूमिका है। परन्तु वृहद रूप में किसी क्षेत्र विषयांतर्गत झारखण्ड के संग्रहालय एक अनुशीलन के अध्ययन का अभाव है।

अतः झारखण्ड के संग्रहालयों को व्यापक रूप से प्रस्तुत करने एवं झारखण्ड में संग्रहालयों के संपूर्ण विकास में इसकी व्यावहारिक उपयोगिता की जानकारी देने के लिए इस शोध अंतरालों को संबोधित करना आवश्यक है। इस क्षेत्र में संग्रहालयों के विकास हेतु किए जा रहे प्रयासों का विस्तृत अध्ययन कर इस शोध अंतराल को भरा जा सकता है।

4- 'kks/k dh leL;k

प्रस्तावित शोध का मुख्य विषय झारखण्ड के संग्रहालय एक अनुशीलन है। इसके अंतर्गत झारखण्ड के संग्रहालयों की स्थापना और विकास का ऐतिहासिक अध्ययन किया जाएगा। साथ ही झारखण्ड के संग्रहालयों में प्रदर्शित कला और संस्कृति का विश्लेषण किया जाएगा। झारखण्ड के संग्रहालयों में संरक्षित सांस्कृतिक विरासत का अध्ययन किया जाएगा। साथ ही इस शोध में झारखण्ड के संग्रहालयों के संरक्षण और प्रदर्शन के तरीकों का अध्ययन किया जाएगा।

5- 'kks/k ds mn~ns';

प्रस्तावित शोध प्रबंध निम्नलिखित उदेश्यों से अभिप्रेरित है –

- झारखण्ड के विभिन्न संग्रहालयों के इतिहास एवं विकास का अध्ययन करना।
- झारखण्ड के संग्रहालयों में प्रदर्शित वस्तुओं का विश्लेषण करना।
- झारखण्ड के एतिहासिक एवं सांस्कृतिक धरोहरों की रक्षा करना।
- संग्रहालय के विकास में बाधक तत्वों का पता लगाना।
- झारखण्ड के जनजातीय सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करना।
- संग्रहालय के विकास में सुझाव देना।

6- 'kks/k dh ifjdYiuk &

प्रस्तावित शोध की निम्नलिखित परिकल्पनाएँ है –

- झारखण्ड के संग्रहालयों में संरक्षित सांस्कृतिक विरासत झारखण्ड की पहचान है।
- झारखण्ड के संग्रहालय राज्य की विभिन्न वस्तुओं का संग्रहण करती है तथा राज्य की इतिहास और संस्कृति को प्रस्तुत करती है।
- झारखण्ड के संग्रहालय, झारखण्ड के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

- झारखण्ड के संग्रहालयों की भूमिका में शोधार्थियों को शोध हेतु अमूल्य तथ्य उपलब्ध कराती है।
- संग्रहालय एक बौद्धिक केन्द्र है, जहां ज्ञान के मूर्त–अर्मूत तत्वों संग्रह है।
- झारखण्ड में संग्रहालय का विस्तार एवं विकास कर जनजातीय–गैर जनजातीय परम्परा, संस्कृति, धर्म, समाज आदि को संरक्षित करने का प्रयास किया जा सकता है, जिसका प्रभाव भविष्य में इस क्षेत्र को विशिष्ठता प्रदान करेंगी।

7- 'kks/k fof/k ,ao 'kks/k iz:k : i

प्रस्तावित शोध अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक स्त्रोतों के विश्लेषण से किया जाएगा। प्राथमिक स्त्रोतों में झारखण्ड के संग्रहालयों से सूचनाएँ प्राप्त की जाएगी। साथ ही परम्परागत और आधुनिक पद्धतियों का पुस्तकालयी और पर्यवेक्षणात्मक पद्धतियों का अनुगमन किया जाएगा। शोध तकनीक के जो मूलभूत सिद्धांत, उपकरण और तकनीके है उनकी आवश्यकतानुसार सहायता ली जाएगी। शोध तकनीक के रूप में अवलोकन निर्देशन साक्षात्कार आदि लिया जाएगा।

प्रस्तुत शोध की विधि ऐतिहासिक होगी, जिसमें समाज का इतिहास उसके वर्तमान स्वरूप का मूलाधार होता है। इसलिए उसकी वर्तमान संस्थाओं, समस्याओं एवं विचारधाराओं के विशिष्ट स्वरूपों को जानने हेतु उसके इतिहास का ज्ञान होना अनिवार्य होता है। यह कार्य ऐतिहासिक अनुंसधान द्वारा संभव होता है। ऐतिहासिक अनुसंधान भूतकालीन घटनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त करने से संबंधित होता है। ऐतिहासिक अनुसंधान में मुख्य रूप से दो प्रकार के प्रलेखों को सम्मिलत किया जाता है –

पहला है व्यक्तिगत प्रलेख जिन्हें किसी व्यक्ति द्वारा निजी रूप से लिखा गया है और दुसरा है, सार्वजनिक प्रलेख जिन्हें रिकॉर्ड के रूप में किसी सरकारी संस्थान या कार्यालय से प्राप्त किया गया है।

8- vkdMk lxg grq midj.k ,o rduhd

प्रस्तुत शोध प्रबंध के अंतर्गत निम्नलिखित शोध उपकरणों का प्रयोग किया जाएगा –

- शोध से संबंधित पुस्तकें, प्रकाशित जर्नल, रिपोर्ट आदि।
- पत्र–पत्रिकाएँ, समाचार पत्र आदि।
- संदर्भ ग्रंथ हेतु पुस्तकें।
- कैमरा (चित्र एवं विडियोग्राफी के लिए)
- लैपटॉप टाइपिंग के लिए।
- कम्प्यूटर इंटरनेट से खोज के लिए।
- नक्शा पेपर, पेन, पेसिंल, रबर आदि।
- लाइब्रेरी
- वेबपेज, ब्लॉग आदि।
- टेपरिकॉर्डर (साक्षात्कार आदि के लिए)।

rduhd &

9- 'kk/k dk;l dk egRo

यह शोध एतिहासिक परिपेक्ष्य में महत्वपूर्ण है।

इसके पीछे कई कारण है जैसे – झारखण्ड की सांस्कृतिक धरोहर एवं इतिहास के दृष्टि से धनी एवं समृद्ध राज्य है। परन्तु इसके संरक्षण एवं विकास पर काफी कम शोध हुए है, वही संग्रहालय यहाँ के कला संस्कृति एवं पहचान के संरक्षण एवं प्रदर्शन में प्रमुख भूमिका निभाते है। वर्तमान समय में यहाँ की जनजातीय संस्कृति एवं इतिहास विलुप्तता के संकट से जूझ रही है। ऐसे में यहाँ के संग्रहालय को जनजातीय समाज के साथ जोड़कर उनकी कला, संस्कृति एवं इतिहास को

बचाया जा सकता है, साथ ही वर्तमान सग्रहालयों के सम्मुख जो चुनौतियां है उनका समाधान प्राप्त किया जा सकता है।

10- orZeku le; esa fo"k; dh mikns;rk ,oa vko';drk &

यह शोधकार्य का अध्ययन झारखण्ड में पुरातत्व, संग्रहालीय शिक्षा तथा झारखण्ड में लुप्त होती संस्कृति एवं इतिहास को संरक्षित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। शोध संग्रहालीय शिक्षा कमतर होने के कारण झारखण्ड के पुरातात्विक संस्कृति, आदिमानव के बसावट से संबंधित मुद्दा, कला स्थापत्य, संस्कृति की महत्ता, शोधार्थी, आमजन तथा राष्ट्रीय एंव वैश्विक स्तर पर उभर नही पा रहा है। जिसका विपरीत प्रभाव हमारे नवपीढ़ी वर्ग पर अधिक देखा जा सकता है।

प्रस्तावित शोध कार्य में वर्तमान समय में झारखण्ड में संग्रहालीय शिक्षा और झारखण्ड में लुप्त होती संस्कृति एवं इतिहास को संरक्षित करने में संग्रहालय की भूमिका कितना नितांत है, लोग समझ पायेंगें। इस विषय पर सकारात्मक बदलाव लाने की प्रक्रिया शुरू हो सकेगा।

11- orZeku Kku esa ;ksxnku

झारखण्ड के संग्रहालय लंबे समय से उपेक्षित और हांसिए पर रहे है जिसके कारण अबतक उनकी महत्ता को समझा नहीं गया है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से संग्रहालय के विकास को एक नया आयाम मिलेगा और साथ ही आम लोगों में संग्रहालय के प्रति एक समझ विकसित होगी। संग्रहालय झारखण्ड के इतिहास और संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के साथ सामाजिक आर्थिक विकास में अपनी भूमिका निभा सकता है।

12- Hkfo"; dk;Z

प्रस्तावित शोध झारखण्ड के संग्रहालय एक अनुशीलन पर केन्द्रित होगा। यद्यपि इसके अंतर्गत झारखण्ड के विभिन्न संग्रहालयों के विषय में अध्ययन किया जाएगा एवं झारखण्ड के कला एवं संस्कृति का संरक्षण किया जाएगा। साथ ही संग्रहालयों में सामुदायिक भागीदारी को भी बढावा देने की आवश्यकता पर भी प्रकाश

डाला जाएगा तथा झारखण्ड के संग्रहालयों का झारखण्ड के समाज और संस्कृति पर प्रभाव का भी अध्ययन किया जाएगा।

13- iLrkfor v/;k;

	भूमिका
प्रथम अध्याय –	ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
द्वितीय अध्याय –	डॉ0 रामदयाल मुण्डा जनजातीय शोध संस्थान एवं संग्रहालय रांची।
तृतीय अध्याय –	राज्य संग्रहालय रांची।
चतुर्थ अध्याय –	संथाल परगना के विविध संग्रहालय
पंचम अध्याय –	बिरसा मुण्डा स्मृति संग्रहालय
षष्टम अध्याय –	अन्य प्रमुख संग्रहालय
	निष्कर्ष
	संदर्भ ग्रंथ

lnHk lph

1. वी.वीरोतम, झारखण्ड : इतिहास एवं संस्कृति, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना, 2004,
2. दिवाकर मिंज, झारखण्ड का इतिहास, क्राउन पब्लिकेशन, राँची, 2021
3. दिवाकर मिंज, देलोमाय हांसदा, इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सिड्यूल ट्राइब्स इन झारखण्ड, कल्पाज पब्लिकेशन दिल्ली, 2010
4. सीपी सिन्हा, प्री एण्ड प्रोटो हिस्ट्री ऑफ झारखण्ड, बी.आर. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन, दिल्ली, 2018
5. सीपी सिन्हा, अरबिंदा सिंघा रॉय, आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर ऑफ झारखण्ड बी. आर. पब्लिशिंग कॉरपोरेशन दिल्ली, 2023

6. अरबिन्दा सिंघा रॉय, स्कल्पचर्स इन द स्टेट म्यूजियम राँची, बी.आर. पब्लिशिंग कारॅपोरेशन दिल्ली, 2020

7. डीएन ओझा, झारखण्ड के अभिलेखों का सांस्कृतिक अध्ययन, शिवालिक प्रकाशन, नई दिल्ली, 2011

8. सीमा ममता मिंज, अर्कियोलॉजी ऑफ झारखण्ड स्पेशल रेफ्रेंस टू हजारीबाग डिस्ट्रिक्ट, शोद्यगंगा, 2010

9. शिवस्वरूप सहाय, संग्रहालय की ओर, मोतीलाल बनारसीदास दिल्ली, 1992, 2005

10. व्योमकेश त्रिपाठी, गौरी शंकर महापात्रा, बसंत कुमार मोहनता, एथनॉग्राफिक म्यूजियम इन सेंट्रल इंडिया, आयु पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2019

11. कमल एस श्रीवास्तव, संगीता श्रीवास्तव, संग्रहालय विज्ञान एक अध्ययन, संगीता प्रकाशन, वाराणसी उ0प्र0, 1998

12. जोवाकिम डुंगडुग, खड़िया, मुण्डा और उरांव संस्कृति का तुल्नात्मक अध्ययन, झारखण्ड झरोखा, रांची, 2014

13. जोवाकिम, डुंगडुग, खड़िया जीवन और परम्पराएँ, झारखण्ड झरोखा, रांची 1999

14. मो0 शर्फूद्दीन, झारखण्ड हिडेन वॉक : द झारखण्ड वी नो इज जस्ट द सर्फेस, कला संस्कृति, खेलकूद एंव युवा कार्य विभाग, झारखण्ड सरकार, 2015

15. मो0 शर्फूद्दीन, झारखण्ड एथनोलॉजी : अ ब्रीफ इंट्रोडक्शन अबाउट द ट्राइबल पीपल ऑफ झारखण्ड वॉल्यूम–1, 2019

16. कमलशंकर श्रीवास्तव, झारखण्ड–कल्चरल एण्ड आर्कियोलॉजिकल पर्सपेक्टिव, आगमकला प्रकाशन, दिल्ली, 2016

17. दिलबर भेंगरा, अर्कियोलॉजी ऑफ द छोटानागपुर डिवीजन, झारखण्ड, अगम कला प्रकाशन, दिल्ली, 2007

18. एससी रॉय, द मुण्डाज एण्ड देयर कंट्री, राँची (रिप्रिंट) 1995, पृ0 18

19. इंटरनेशनल काउंसिल ऑफ म्यूजियम, 24 अगस्त 2022 का रिपोर्ट
20. शुभाशीष दास, नियोलिथिक एण्ड चाल्कोलिथिक कल्चर ऑफ झारखण्ड, 2013
21. भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण रांची, द्वारा प्रकाशित जर्नल
22. रंजना रावत, म्युजियम्स अ हिस्टोरिकल कलेक्सन ऑफ डिफरेंट असपेक्टस ऑफ स्टेट, सोसाइटी एण्ड कल्चर, आस्था प्रकाशन दिल्ली, 2024
23. केशव चन्द्रा, इवोल्यूशन ऑफ म्युजियम्स एण्ड म्युजियम्स एण्ड म्यूजियोलॉजी, राइर्टस वर्ल्ड दिल्ली,
24. गिरीशचन्द्र शुक्ल, विमलेश कुमार पाण्डेय, संग्रहालय विज्ञान, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 2002
25. उषा अग्रवाल, डायरेक्ट्री ऑफ म्युजियम्स इन इंडिया, संदीप प्रकाशन नई दिल्ली 2000 ई
26. शोभिता पंजा, म्युजियम्स ऑफ इंडिया, गाईड बुक कॉरपोरेशन हांगकांग 1990,
27. आर गणेशण, भारतीय संग्रहालय एवं जनसंपर्क, विश्वविद्यालय प्रकाशन, 2002
28. स्मिता बक्सी, देवेन्द्र द्विवेदी, मॉर्डन म्युजियमः ऑरगेनाईजेशन एण्ड प्रेक्सि इन इंडिया, अभिनव पब्लिकेशन, 1973
29. ओ0 पी0 अग्रवाल, केयर एण्ड प्रिजवर्शेन ऑफ म्युजियम ऑब्जेक्टस, NRLC दिल्ली, 1997
30. कमल के. जैन, कन्जर्वेशन ऑफ कल्चरल हेरिटेज, आगम कला प्रकाशन दिल्ली, 2009 ई.
31. आलोक त्रिपाठी, म्युजियम स्टडीज, शारदा पब्लिशिंग हाउस दिल्ली, 2012
32. वी. एस. अग्रवाल, म्युजियम स्टडीज अ कलेक्शन ऑफ पेपर्स ऑन म्युजियम मेथड एण्ड आईडियल्स, पृथ्वी प्रकाशन वाराणसी, 1973
33. आर. डी. चौधरी, म्युजियम्स ऑफ इंडिया एण्ड देयर मेलेडीज, आगम कला प्रकाशन दिल्ली, 1998

34. ए. पी. सिंह, कन्जर्वेशन एण्ड म्युजियम टेकनीक्स, आगम कला प्रकाशन दिल्ली, 2019

'kks/k funs'kd%
Mk- jkt dqekj
सहायक प्राध्यापक
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
Qksu& 9431182959

'kks/kkFkhZ%
gthjk dqtwj
यू.जी.सी.नेट, जे.आर.एफ.
विश्वविद्यालय इतिहास विभाग
राँची विश्वविद्यालय, राँची
Qksu& 6287652821